BA-(H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पार्ट - वन
पत्र - प्रथम खण्ड
Lecture - III

प्रो० इंजीत कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U.)

वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क काव्य प्रतिभा:-

यात्रीजीक चित्रा मे संगृहित 'भरतोल प्रात' आगिन मासक राति इजोरिया' 'बुढ़िबा नक्षत्र मे, एवं पत्रहीन नग्न गाछ मे संगृहीत कविता 'नान्हि - नान्हि टा फूल', 'भोर-भोर, माघ बीतल आधा फागुन' 'सावोन' भागलपु कोन-कोन कें छापल पड़ल छवि सरिता, श्याम घटा, धन घमंड गंभुज कोन-कोन कें छापल पड़ल छवि सरिता। मिथिलाक सांस्कृतिक धरातल पर कवि सावनक शृंगार करैत कहैत छथि:-
"कोन पानि कड़ फुरल पड़ल आहि, गाछक प्रौढ़ लोकनि नहाइ, नीचमे हम भरि पोखरि पइरनाइ, बड़ाइ बरहमा फुसलाइह, चोनब राहि आन भइआ, बालहेशक हम कुरब लिंगारइ।"
एहि मे अनुभूतिक जेहन अभिव्यक्ति भेल अछि से कवि कें महाकविक वरिष्ठ आसन पर प्रतिष्ठित करैत अछि।

यात्रीजी नवशक्ति कें रूप सँ बेसी महत्व दैत छथि। हुनक विश्वास छनि जे श्रमशील मानव धरती पर स्वर्ग कें उतारि दैत अछि। कवि

हिनका लोकनि कें धन्यवाद करैत कहैत छथि:—

" धन्य हे श्रमशील मानव / विश्व आदि मे व्याप्त
छन्हि तोहर जाति
नरक कें सुरग बनाबय लेल
सदखन तो दैह छह अपस्याँत
एक दिन तोहि रहतौ सामन्त सें छोड़ि
सम्मिलित स्वच्छ प्रवाहित जयति जय
जन शक्ति ।

यात्रीजीक कविता मनुष्य मे आत्मबलक संचार करैत अछि। वास्तव मे आत्मबल सम सँ पैघ बल थीक। कवि सम्पूर्ण मानवके एहि आत्मबल कें जगाबय आ उद्बोधक संदेश दैत अछि। हिनक समस्त काव्य जीवनक यथार्थ बोध, धरती आ जनताक प्रति अनन्य प्रेम, श्रमिक वर्गक प्रति सहानुभूति, गरीबक प्रति स्नेह, आम जनताक प्रति उत्कर्षक भावना सँ युक्त सामाजिक जन-चेतनाके वाणी देनिहार कवि यात्री अपन काव्य माध्यम सँ सामान्य जनता कें सजग आ सचेष्ट बनौलनि अछि।

— [illegible] —

Sanjit Kumar